International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.328
Vol.9 No.3 Jan – Feb 2022

हिजड़ा समाज का आदर्श और प्रेरणा : 'मैं हिजड़ा-- मैं लक्ष्मी !'

डॉ. जी.एस. भोसले

हिंदी विभागाध्यक्ष,

सावित्रीबाई फुले महिला महाविद्यालय, सातारा

शोधसार:

युगों से जिन्हें हम मानव कहने से हिचकिचाते रहे, मानव समाज से हमेशा जिन्हें बेदखल किया, उपेक्षा की दृष्टि से देखा वह किन्नर या हिजड़ा समाज अपने अस्तित्व के लिए युगों से छटपटाता रहा है | हालांकि राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नाल्सा) बनाम भारत संघ और अन्य के मामले में उच्चतम न्यायालय द्वारा इस समुदाय को 'तृतीय लिंग' (थर्ड जेंडर) के रूप में पहचान देने के साथ ही उन्हें सभी विधिक और संवैधानिक अधिकार प्रदान करने का निर्देश केंद्र और राज्य सरकार को देने के बाद इनकी पहचान निश्चित करने की दिशा में पहला कदम उठाया गया है। 15 अप्रैल, 2014 को न्यायमूर्ति केएस राधाकृष्णन और न्यायमूर्ति एके सीकरी की खंडपीठ द्वारा यह निर्णय दिया गया। यह फैसला एक तरह से इस वर्ग के हित में है, क्योंकि यह उनकी पहचान सुनिश्चित करता है, पर एक वर्ग ऐसा भी है, जो 'तीसरे लिंग' की इस पहचान को स्वीकार नहीं करना चाहता। समाज और घर परिवार भले जनन अंगों से विकारग्रस्त व्यक्ति को हिजड़ा या किन्नर कह कर 'थर्ड जेंडर' वर्ग में नामांकित करते हैं, पर वास्तविकता इससे कहीं इतर है। प्रत्येक किन्नर भीतर से आत्मिक, मानसिक और अनुभूति के स्तर पर या तो स्त्री होता है या पुरुष। समस्या इस बात की है कि वह अपनी जननेंद्रियों से हीन होने के कारण समाज और परिवार द्वारा तिरष्कृत होता रहता है। सामाजिक स्तर पर व्यावहारिक रूप से इस ऐतिहासिक और साहसिक फैसले को क्रियान्वित होने में समय लग सकता है। क्योंकि हमारे समाज का बड़ा हिस्सा पूर्वाग्रहों से ग्रस्त है। यहां हरेक सक्षम वर्ग द्वारा इन्हें हमेशा बड़ी हिकारत से देखा गया है। यही कारण है कि समाज में इस वर्ग के संघर्ष का कोई अंत नहीं रहा है।

'मैं हिजड़ा --मैं लक्ष्मी!' आत्मकथा में लक्ष्मी ने अपने कर्तृत्व से इस अमानवीय परम्परा को तोड़ने का और समाज के समक्ष एक नया आदर्श स्थापित करने का प्रयास किया है, जो सराहनीय है | लक्ष्मी की इस सफलता के पीछे पिताजी और परिवार का साथ तथा उसका अपना कष्ट महत्वपूर्ण है | अपने समाज के लिए न्याय प्राप्त करने की उसकी कांक्षा भी सराहनीय है |

बीज शब्द : *हिजड़ा, गे, बाईक्या, मामू, एबनॉर्मल, जबरदस्ती, ड्रैगक्वीन, तवायफ, कम्युनिटी, जोग जनम,खानदान, बृहन्नला, खोजां, दाई, प्लेटॉनिक फ्रेंडशिप, गुरु,हार्मोनल ट्रीटमेंट, अस्तित्व, लेस्बियन, इन्डियन सुपरक्विन, चेला, निर्वाण, लिंगछेद, युनक, ट्रान्सजेंडर्स*|

शोध विस्तार:

1. **होनहार छात्र:**
2. **नृत्य तथा अन्य कलाओं में माहिर:**
3. **माता-पितातथा परिवार के साथ आत्मीयसंबंध:**
4. **हिजड़ा समाज के विकास की योजनाएं:**
5. **विदेशों में अपने समाज का नेतृत्व:**

1. होनहार छात्र:

लक्ष्मी नारायण उर्फ़ राजू अपने माँ-बाप का पहला लड़का होने से बहुत लाड प्यार मिला | उसे अच्छे स्कूल में भरती किया था, बड़ी लगन के साथ पढ़ता था, पड़ोस में रहनेवाली संगीता आंटी उसे अंग्रेजी पढ़ाती थी | परिणामत: वह वक्तृत्व स्पर्धाओं में पुरस्कार प्राप्त करता रहा | "मैं स्कूल में वक्तृत्व- स्पर्धा में भाग लेता था | उसमे पुरस्कार मिलते थे | संगीता आंटी मेरी तैयारी करा देती थी |" [1] हमेशा बीमार रहने की वजह से लक्ष्मी को सिंघानिया हायस्कूल छोड़कर 'बीम्सपॅराडाईज' में भरती होना पड़ा | सिंघानिया हायस्कूल में मिले संस्कारों ने लक्ष्मीका व्यक्तित्व निर्माण किया था | लक्ष्मी के शब्दों में – " वहाँ का माहौल सिंघानिया से काफी अलग था | बच्चे अलग माहौल से आये हुए थे | मैं हमेशा अंग्रेजी बोलनेवाला, स्मार्ट... यहाँ के बच्चे मेरी तरफ अलग नजर से देखते थे |"[2]एसएससी के बाद लक्ष्मी ने मिठीबाई कालेज में अपनी अगली शिक्षा जारी रखी |

2. नृत्य तथा अन्य कलाओं में माहिर:

राजूपढाईमें अव्वल था ही साथ ही अभिनय, नृत्य आदि कलाओं में भाग लेता था, परिणामत: आगे इसी में करियर कर सका | जूनियर केजी में टोपी बेचनेवाले का रोल किया था | राजू उर्फ़ लक्ष्मी को बचपन से ही नृत्य कला में रूचि थी, "कोई भी गीत सुनते ही मेरे पैर थिरकने लगते थे—स्कूल जाने लगा तब ये बात अध्यापकों के ध्यान में आयी और उन्होंने स्कूल के हर एक प्रोग्राम में मुझे स्टेज पर खड़ा किया --- बिलकुल जूनियर केजी से |"

[3]दीदी रुक्मिणी तथा स्कूल टीचर ने लक्ष्मी को नृत्य सिखाया था | बेबी जॉनी मिस नृत्य कला में लक्ष्मी की स्टेपिंग स्टोन थी | वह कोरियोग्राफी करती थी | "मेरी कला को उन्होंने पहचाना, तराशा, रूप दिया | धीरे-धीरे लोग मुझे डांसर के रूप में पहचाननेलगे| बेबीजॉनीजी की क्लास में मैं छोटे बच्चों को डांस सिखाता था | सिखाने की कला मुझमे थी ही, इसलिए मेरा सिखाना बच्चों कों भी पसंद था | पर धीरे-धीरे यह सब मुझे अधूरा लगने लगा और जब मैं सातवी-आठवी कक्षा में था, तभी खुद के डांस क्लासेस सुरु किये 'विद्या नृत्य निकेतन' के बैनर पर |"[4]वैशाली मिस ने फ़िल्मी स्टाइल का डांस सिखाया | आज भी लक्ष्मी 'लकीचॉप डांस अकेडमी' चलाती है | उसने इंडस्ट्री में भी डांस सिखाने का और अभिनय का काम किया | विदेशों में भी डांस शो किए हैं |मुंबई के डांस बार में बारबाला बनकर पैसों के लिए भीनृत्य किया था |

3. माता-पिता तथा परिवार के साथ आत्मीय संबंध:

भारतीय समाज में हिजड़े के रूप जन्म लेनेवाले बच्चों को परिवार से दूर करने की प्रथा है | ऐसे बच्चों को अपने घर में रखना परिवार जनों को अपमान जनक लगता है | ऐसे तृतीय पंथी लोग मजबूरन अपना अलग परिवार (हिजड़ों का) बनाते हैं और भीख मांगकर या शरीर बेचकर नरक-यातनाभरा जीवन जीने के लिए मजबूर होते हैं | लक्ष्मी के हिजड़ा बनने के बाद आरम्भ में कुछ दिन परिवार ने लक्ष्मी के साथ अबोला रखा | लेकिन कुछ ही दिनों में शादी के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा समझकर पिताजी ने अपने बेटे राजू (लक्ष्मी) के लिए लड़कीढूँढी | लक्ष्मी को इस बात का धक्का- सा लगा और पिताजी को समझाया कि,"मुझे शादी नहीं करनी है | इस वजह से मेरी जिंदगी तो बरबाद होगी ही उस लड़की की भी होगी....फिर मुझे ही जान देनी होगी |"[5] पिताजी की आँखों में लक्ष्मी ने पहली बार आंसू देखे | पिताजी ने उसे बहुत लाड प्यार से पाला था | इसी वजह से उसके मन में अपने परिवार के प्रति अगाध आत्मीयता है | उसे छोड़कर दूर न जा सकी | लता गुरु ने उसे परिवार से दूर करने का बहुत प्रयास किया | लेकिन उस समय माता-पिता लक्ष्मी के पीछे मजबूती से खड़े रहे और लक्ष्मी से कहा, "आने दे उस लता गुरु को | तुम यहीं रहो | कहीं भी जाने की जरुरत नहीं हैं उनके साथ |"[6] 'दस का दम' नामक टीवी शो में पिताजी ने दिया हुआ जवाब भी लक्ष्मी के प्रति होनेवाली आस्था प्रकट करता है, "अपने ही बेटे कों मैं घर से बाहर कैसे निकालू ? मैं बाप हूँ उसका, मुझ पर जिम्मेदारी है उसकी | और ऐसा किसी के भी घर में हो सकता है | ऐसे लड़कों को घर से बाहर निकालकर क्या मिलेगा ? उनके सामने तो हम फिर भिक माँगने के अलावा और कोई रास्ता ही नहीं छोड़ते हैं | लक्ष्मी को घर से बाहर निकालने का सवाल ही पैदा नहीं होता |"[7] अगर प्रत्येक हिजड़े

का परिवार उसके पीछे इसी तरह खड़ा रहेगा तो उसे अपमानभरा और उपेक्षा का जीवन नहीं जीना पड़ेगा | इससे समाज के लिए एक अच्छा सन्देश मिला है | हिजड़ों के प्रति देखने का हीनताभरा दृष्टिकोण भी बदल रहा है |

4. हिजड़ा समाज के विकास की योजनाएं:

हिजड़ा बनने के बाद लक्ष्मी ने हिजड़ों के जीवन को नजदीक से देखा, अनुभूत किया और उनका इतिहास भी पढ़ा | उनकी अपमान, उपेक्षा और समस्या भरी जिंदगी का निरिक्षण किया | और फिर उनके कल्याण के लिए काम करना आरम्भ किया | 'दाई वेलफेअर सोसायटी' की स्थापना करने के पीछे उसका यही उद्देश्य था | वह हिजड़ों के हित के लिए हिजड़ों द्वारा चलाई जानेवाली सेवा संस्था थी | "दाई का प्रमुख कार्य था हिजड़ों के स्वास्थ्य की रक्षा करना |"[8] लक्ष्मी और उसके साथी हिजड़ा बस्ती में जाते थे और उन्हें कंडोम की जानकारी देकर स्वास्थ्य की दृष्टि से उसका महत्व बताते थे | कोई बीमार हो तो उसे सरकारी अस्पताल में भरती करते थे | उनकी कोई फ़िक्र कर रहा है देखकर हिजड़ों को अच्छा लगता था | हिजडा समुदाय के मुखिया और नायकों ने इसका विरोध किया था, लेकिन सफलता देखकर विरोध कम होता गया | शबीना और प्रिया के दाई छोड़ जाने के बाद भी लक्ष्मी ने मेहनत के साथ सेवा कार्य जारी रखा | अध्यक्षा बनकर हिजड़ों को सभ्य समाज का हिस्सा बनाने के लिए कार्यरत रही | लेकिन एक जोरदार झगड़े के बाद दाई के अध्यक्ष पद और सभासदत्व से भी लक्ष्मी ने इस्तीफा दिया| 2006 में 'अस्तित्व' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य हिजड़ों का कल्याण ही था | एच आई वी /एड्स का पायलट प्रोजेक्ट, हिजड़ा समाज कों सक्षम बनाना, उनके प्रति देखने का समाज का दृष्टिकोण बदलना, अन्याय समाप्त करना, अस्पताल में सम्मानजनक उपचार की सुविधा प्राप्त करना जैसे अनेक काम अस्तित्व के द्वारा जारी रखे |

रियालिटी टीवी स्क्रीन का उपयोग करके बड़े-बड़े सेलेब्रेटीज के माध्यम से भी लक्ष्मी ने अपने समाज की 'विजिबिलिटी' बढाने का काम किया | वहाँ हिजड़ों के बारे में समाज मन में होनेवाली गलतफहमियाँ दूर करने का काम उसने सफलतापूर्वक किया है | सभी जगह सभ्य और सुसंस्कृत आचरण करके लक्ष्मी ने अपने उदाहरण द्वारा हिजड़ा समाज की प्रतिष्ठा बढ़ाने का कार्य किया है | हिजड़ों के विकास के सोपान में इसकी बहुत बड़ी अहमियत है |

5. विदेशों में अपने समाज का नेतृत्व:

लक्ष्मी हिजड़ों के लिए भारत में काम कर ही रही थी, लेकिन उसका काम देख विदेशों में भी उसे अपने समाज का नेतृत्व करने का मौक़ा बार-बार प्राप्त हुआ | जिससे हिजड़ों की समस्याओं को अंतरराष्ट्रीय मंच मिला | साथ ही वे भी आम लोगों जैसे होते हैं तथा सफलतापूर्वक जिम्मेदारी निभा सकते हैं, इसे भी सिद्ध करना संभव हुआ |

आरम्भ एच.आय.वी.एड्स की स्थिति पर मुंबई में हुई राउंड टेबल मिटींग से हुआ; जिसमे युनायटेड नेशन के तब के सेक्रेटरी कोफ़ी अन्नन आए हुए थे | भारतीय हिजड़े को वैश्विक प्रतिनिधित्व पहली बार मिला था | उसके बाद अगस्त, 2006 में टोरांटो की सोलहवीं अंतरराष्ट्रीय एड्स कॉफरंस में भाग लेने का मौका मिला | यह भी किसी हिजड़े को पहली बार मिला था | विश्वभर के लोगों से मिलकर और अनुभव सुनकर लक्ष्मी में आत्मविश्वास आ गया | सबके सामने भारतीय हिजड़ों की स्थिति पर भाषण भी दिया, वह बाहरी दुनिया में मिला पहला एक्सपोजर था|

मई 2007 को अमस्टरडैम में हुए 'नेदरलैंड ट्रांसजेंडर फिल्म फेस्टिवल' में अनिता खेमका के सहयोग से सहभाग लेना लक्ष्मी को संभव हुआ | वहां उसकी मुलाक़ात तैवान विश्विद्यालय की जोसेफाइन हू से हुई | वह 'स्टडीज फॉर सेक्सुअलिटीज' की समन्वयक थी | इसके अलावा बहुत से ट्रांसजेंडर प्रतिनिधियों से पहचान हुई |

2008 में एस.एन.डी.ओ. के वर्कशॉप में डांस सिखाने के लिए अमस्टरडैम जाने का मौका फिर एक बार मिला | पहले ही दौरे में अच्छी दोस्त बनी सुजन के साथ इस वक्त गहरी दोस्ती हो गई | कुछ दिनों बाद सुजन की इजाजत से अन्य हिजड़ों को लेकर लक्ष्मी वहाँ गई | भारतीय नृत्य के अलग-अलग पहलुओं को पेश किया गया था, जिसे देखकर लोग बेहद खुश थे | बीबीसी ने इस पर स्टोरी बनाई | लक्ष्मी को अपने इस कार्य पर नाज था | "फेस्टिवल का आखरी दिन था | लोग मिलने के लिए आ रहे थे ....हमारा अंतिम परफॉरमंस था ...सुजन ऑक्सनर और उसका कल्चरल सेक्रेटरी विन्सन, दोनों आये थे | परफॉरमंस हुआ और मेरी आँखे भर आयी | एक तरफ तो मुझे यह बेचैनी थी कि फेस्टिवल के इतने अच्छे दिन ख़त्म हुए, तो दूसरी तरफ अपने समाज के लिए मैं कुछ कर सकी, इसका गर्व था |"[9]

उपसंहार:

लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी उर्फ लक्ष्मी की जीवन-यात्रा को पढ़कर उसके परिवार के प्रति उसके गहरे प्रेम का एहसास होता है। परिवार उसकी पहली प्राथमिकता है। उसके लिए उसके माता-पिता और भाई-बहनों की खुशी महत्वपूर्ण है। एक बिंदु पर, लक्ष्मी को पता चलता है कि वह 'गे' है। इसलिए वह उसी (हिजाडों) तरह जीने का फैसला करती है। लेकिन उस दशा में भी समाज की फिक्र किए बगैर उसका परिवार उसे स्वीकारता है| उसके परिवार का यह फैसला समाज की गलत परंपरा को तोड नया आदर्श स्थापित करता है|

लक्ष्मी ने दोनों परीवारों के साथ सहृदय रिश्ता रखा | लेकिन उसने हमेशा उपहास, उपेक्षा और घृणा का विषय बने हिजडा समुदाय को न्याय देने के लिए किए हुए प्रयास एक अमिट इतिहास बन गया है | सामाजिक कार्य करते हुए, लक्ष्मी एक व्यक्ति के रूप में अधिक से अधिक समृद्ध हो गई है, विदेश यात्रा कर रही है, विदेश में कुछ लोगों के साथ एक अद्वितीय संबंध रखती है। लक्ष्मी में छिपा प्रेममयी मन उसके द्वारा प्रकट होता है। युगों से हासिए पर रहनेवाले हिजडा समाज के लिए लक्ष्मी का जीवन और कार्य प्रेरणादाई और दिशादर्शक है|

सन्दर्भ सूची :

1. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी : मैं हिजड़ा – मैं लक्ष्मी, आवृत्ति-2018, पृ. 29
2. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी : मैं हिजड़ा – मैं लक्ष्मी, आवृत्ति-2018, पृ. 32
3. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी : मैं हिजड़ा – मैं लक्ष्मी, आवृत्ति-2018, पृ. 26-27
4. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी : मैं हिजड़ा – मैं लक्ष्मी, आवृत्ति-2018, पृ. 40
5. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी : मैं हिजड़ा – मैं लक्ष्मी, आवृत्ति-2018, पृ. 60
6. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी : मैं हिजड़ा – मैं लक्ष्मी, आवृत्ति-2018, पृ. 69
7. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी : मैं हिजड़ा – मैं लक्ष्मी, आवृत्ति-2018, पृ. 108
8. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी : मैं हिजड़ा – मैं लक्ष्मी, आवृत्ति-2018, पृ. 59
9. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी : मैं हिजड़ा – मैं लक्ष्मी, आवृत्ति-2018, पृ. 92